International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-10, Issue-2 March-April-2023 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

# माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के आयामों का अध्ययन

**मीनू [1*], डा० दीपा राणा [2**]**
शोधार्थी [1*], असिस्टेंट प्रोफेसर एवं शोध निर्देशिका [2**]
स्कूल ऑफ एजूकेशन [1,2], शोभित इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी
(डीम्ड–टू–बी यूनिवर्सिटी) एन.एच. 58, मोदीपुरम (मेरठ), इण्डिया।

## शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्तवा के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया। न्यादर्श हेतु मेरठ जिले के कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत 200 छात्र–छात्राओं (100 छात्र एवं 100 छात्रायें) का चयन किया गया है। विभिन्न चरों के मापन हेतु मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययनोपरांत पाया गया कि संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों सांवेगिक स्थिरता एवं सांवेगिक प्रगति में सार्थक भिन्नता होती है जबकि सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व एकीकरण एवं अनाश्रितता में कोई भिन्नता नहीं पायी गयी है।

**कुंजी शब्द– संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम**

## प्रस्तावना

संवेगात्मक परिपक्वता को केवल विकासात्मक तरीके से वर्णित नहीं किया जा सकता है। आत्म–नियंत्रण को परिपक्वता प्राप्त करने के प्रमुख तत्वों में से एक के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन इसका मतलब अपनी संवेगों को दबाना नहीं है। संवेगात्मक परिपक्वता की दिशा में पहला कदम उठाने के लिए सही समय, स्थान और स्थिति पर उचित तरीके से संवेगों की अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण है। कुछ लोग सोचते हैं कि सभी परिस्थितियों में संवेगों पर नियंत्रण रखना ही परिपक्वता है। कुछ अन्य लोग संवेगों की प्रशिक्षित अभिव्यक्ति में परिपक्वता का आकलन करते हैं। एक व्यक्ति को संवेगात्मक रूप से परिपक्व तब माना जाता है जब वह प्रतिक्रिया देते समय अधिक स्थिरता रखने और संवेगात्मक रूप से स्वस्थ रहने का प्रयास कर सकता है। संवेगात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति पर्यावरण की माँगों के साथ तालमेल बिठा लेगा। उनका जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है और वे खुद पर, अपने संवेगों, संवेगों और प्रतिक्रियाओं पर नियंत्रण हासिल करने का प्रयास करते हैं। वे लचीले होते हैं और स्थिति और तनाव को बढा–चढाकर पेश करना पसंद नहीं करते हैं। वे नकारात्मकता से नहीं घिरते।

संवेगात्मक परिपक्वता का अर्थ है व्यक्ति के जीवन की समृद्धि की क्षमता के प्रति जागरूकता की डिग्री और उसे दूसरों से जोड़ने के लिए चीजों का आनन्द लेने की विकसित क्षमता। संवेगात्मक परिपक्वता परिस्थितियों को अनावश्यक रूप से बढ़ाए बिना संभालने की क्षमता है। मनुष्य के जीवन

के लिए भावनाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। अपनी संवेगों पर नियन्त्रण रखना और दूसरों की संवेगों को समझना इंसान के व्यक्तित्व का निर्माण करता है, जो घर, स्कूल और समाज के साथ समायोजन के लिए महत्वपूर्ण है। मनुष्य की मानसिक प्रक्रियाओं से सम्बन्धित शिक्षा, इन मानसिक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। व्यापक सोच में शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया है। विभिन्न परिस्थितियाँ और इन परिस्थितियों के साथ संवाद हमें एक नई सीख देते हैं। संवेगात्मक परिपक्वता मन का एक महत्वपूर्ण चरण है जो इन स्थितियों में समायोजन के लिए आवश्यक है।

**संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम**

**श्रीवास्तव (1983)** ने एक समाजिक परिपक्वता मापनी का विकास किया है। इन कारकों को ध्यान में रखते हुए लेखक ने संवेगात्मक परिपक्वता के पाँच व्यापक कारकों की एक सूची तैयार की है जो निम्नवत् है—

1- **संवेगात्मक स्थिरता—** संवेगात्मक स्थिरता से तात्पर्य किसी व्यक्ति की उन विशेषताओं से है जो उसे अत्याधिक प्रतिक्रिया करने या मन बदलने या किसी भावनात्मक स्थिति में उल्लेखनीय बदलाव की अनुमति नहीं देती है। संवेगात्मक स्थिरता से स्थिर व्यक्ति किसी भी स्थिति में वह करने में सक्षम होता है जो उससे अपेक्षित होता है। इसके विपरीत संवेगात्मक अस्थिरता त्वरित रूप से बदलने वाली अविश्वसनीय प्रतिक्रिया की प्रवृत्ति है।

2- **सांवेगिक प्रगति—** संवेगात्मक प्रगति एक व्यक्ति की विशेषता है जो धार्मिकता एवं संतुष्टि से युक्त सकारात्मक सोच सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण के सम्बन्ध में संवेगों की पर्याप्त उन्नति एवं बढ़ती जीवन शक्ति को संदर्भित करती है।

3- **सामाजिक समायोजन—** समायोजन एक व्यक्ति की जरूरतों के बीच बातचीत की प्रक्रिया को संदर्भित करता है एवं किसी भी स्थिति में सामाजिक वातावरण की मांग ताकि वे पर्यावरण के साथ वांछित सम्बन्ध बनाए रख सकें एवं अनुकूलित कर सकें। इसलिए इसे एक व्यक्ति के अपने सामाजिक संसार के साथ सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

4- **व्यक्तित्व एकीकरण—** व्यक्तित्व एकीकरण किसी व्यक्ति के उद्देश्यों एवं गतिशील प्रवृत्तियों को विविध तत्वों को मजबूती में एकत्र करने की प्रक्रिया है। जिसके परिणामस्वरूप व्यवहार की निर्बाध अभिव्यक्ति में आन्तरिक संघर्ष का सामंजस्य, समन्वय एवं कमी आती है। जबकि विघटित व्यक्तित्व में वे सभी लक्षण सम्मिलित हैं जैसे— प्रतिक्रिया, भय, निर्माण, निष्क्रियता आदि। संक्षेप में ऐसा व्यक्ति विक्षिप्तता की विभिन्न डिग्री को दर्शाता है।

5. **स्वतन्त्रता—** स्वतन्त्रता किसी व्यक्ति की आत्मनिर्भर होने या दूसरों के नियन्त्रण का विरोध करने की प्रवृत्ति की क्षमता है जहाँ वह अपनी बौद्धिक एवं रचनात्मक क्षमताओं का उपयोग करके तथ्यों के आधार पर अपने निर्णय ले सकता है। वह कभी भी अपने निर्णय लेने या कठिन कार्यों को करने में किसी अन्य व्यक्ति पर आदतन निर्भर नहीं दिखाएगा, जबकि एक आश्रित व्यक्ति दूसरे पर परजीवी निर्भरता दिखाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों की सांवेगिक परिपक्वता के मापन हेतु उपरोक्त आयामों के आधार पर प्रगणित किया गया है।

**अध्ययन की आवश्यकता और महत्व**

भावनात्मक परिपक्वता व्यक्ति को आत्म—जागरूक, सकारात्मक, धैर्यवान, सहानुभूतिपूर्ण, आत्म—नियंत्रण, लचीला, जवाबदेह आदि बनने में मदद करती है। इसका मतलब है कि भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्ति जीवन की सभी जटिलताओं को अपना सकता है। विद्यार्थियों के जीवन में माध्यमिक विद्यालय स्तर पर संवेगात्मक परिपक्वता उनके व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालाँकि हम उस व्यक्ति को न्याय का न्यायाधीश कहते हैं, लेकिन भावनाओं से नियन्त्रित उसके आचरण पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है। यदि आप मानव जीवन की प्रकृति, उसके व्यवहार को नहीं जानते तो उसका समग्रता से विश्लेषण नहीं किया जा सकता। इसके अलावा, समाज में स्वस्थ जीवन जीने के लिए विद्यार्थी की संवेगात्मक परिपक्वता का समुचित विकास आवश्यक है। सामाजिक जीवन की सचेतन मानसिक प्रक्रिया व्यक्ति के संवेगात्मक व्यवहार से विशेष रूप से नियन्त्रित होती है। इसलिए यदि संवेगों का विकास ठीक से नहीं हुआ है, तो जीवन का विकास भी पूरा नहीं होता है। जो व्यक्ति संवेगात्मक परिपक्वता के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया ठीक से विकसित नहीं कर सकता, उसे एक आदर्श व्यक्ति नहीं माना जा सकता। ऐसी स्थिति में, एक अच्छा इंसान बनने के लिए व्यवहार के मानदंडों को अपनाने में संवेगात्मक परिपक्वता की आवश्यकता होती है।

**शोध समस्या कथन**

**माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र—छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के आयामों का अध्ययन**

**संवेगात्मक परिपक्वता**

भावनात्मक परिपक्वता न केवल व्यक्तित्व पैटर्न का प्रभावी निर्धारक है, बल्कि एक किशोर के विकास की वृद्धि को नियंत्रित करने में भी मदद करती है। एक व्यक्ति जो अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखने, देरी को सहन करने और आत्म—उत्तेजना के बिना पीड़ित होने में सक्षम है, वह अभी भी भावनात्मक रूप से स्तब्ध हो सकता है। भावात्मक परिपक्वता का प्रभाव मानव के सम्पूर्ण जीवन पर उसके व्यवहार को एक सही दिशा देने के रूप में पड़ता है।

**संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम**

संवेगात्मक परिपक्वता के पाँच व्यापक आयाम हैं जैसे— सांवेगिक स्थिरता, सांवेगिक प्रगति, सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व एकीकरण एवं अनाश्रित आदि

**संबंधित साहित्य की समीक्षा**

**पात्रा, क्षिप्ति मायी (2024)** ने **'ए स्टडी ऑन इमोशनल मैंच्योरिटी एमंग अडोलेसेन्स'** विषय पर सुशीलाबाटी गर्वनमेंट उच्च माध्यमिक विद्यालय, राउरकेला, उड़ीसा से अपना शोध पत्र पूर्ण किया। शोध में न्यादर्श हेतु 200 छात्र—छात्राओं का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया। सूचना संग्रहण के

लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। संवेगात्मक परिपक्वता को मापने हेतु डॉ.यशवीर सिंह एवं डॉ.महेश भार्गव द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि अधिकांश किशोर 16-17 वर्ष की आयु के थे जिनमें से 55% उत्तरदाता एकल परिवार से हैं। समग्र औसत अंकों के आधार पर किशोरों में भावनात्मक परिपक्वता का स्तर कम है और लिंग के सम्बन्ध में महिला, किशोर पुरूष, किशोरों की तुलना में भावनात्मक रूप से कम स्थिर हैं।

**राठौर, पर्वत सिंह (2021)** ने **'माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का एक अध्ययन'** विषय पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से शोध कार्य पूर्ण किया। अध्ययन में जयपुर जिले के नवोदय विद्यालय के 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु लिया गया। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु डॉ.आर.पी.श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत उपकरणों, सामाजिक परिपक्वता मापनी, डॉ.वाई.सिंह एवं डॉ.एम. भार्गव द्वारा निर्मित भावनात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया। परिणाम बताते हैं कि माध्यमिक स्तर के गैर आवासीय एवं आवासीय तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं छात्र—छात्राओं के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकि गैर आवासीय सरकारी विद्यालयों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं छात्रों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

**जोशी, सुनील (2020)** ने **'विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, सांवेगिक परिपक्वता एवं वैज्ञानिक प्रकृति का उपलब्धि से सह—सम्बन्ध'** विषय पर शिक्षा विभाग, पैसेफिक विश्वविद्यालय से पूर्ण किया। प्रस्तुत शोध के लिए उदयपुर शहर के अध्ययनरत 11वीं व 12वीं कक्षा के 600 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श हेतु किया गया। शोध में सामाजिक परिपक्ता मापनी डॉ.आर.पी.श्रीवास्तव, संवेगात्मक परिपक्वता मापनी डॉ.यशवीर सिंह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया तथा साथ ही उपलब्धि स्तर मापनी एवं वैज्ञानिक प्रकृति स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग आंकड़ों के संग्रहण हेतु किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि किशोर विद्यार्थियों एवं छात्र—छात्राओं के सांवेगिक परिपक्वता एवं उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह—सम्बन्ध पाया गया। सांवेगिक परिपक्वता के स्तर में वृद्धि/कमी होने पर उनकी उपलब्धि के स्तर में भी वृद्धि अथवा कमी होती है।

**उग्रसैन (2020)** ने **'ए स्टडी ऑफ द इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड पर्सनैलिटी ऑफ स्टूडेन्ट्स यूजिंग इण्टरनेट इन सीनियर सेकेण्डरी स्कूलस'** विषय पर शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय से शोध कार्य पूर्ण किया। अध्ययन में न्यादर्श हेतु हनुमानगढ़ व श्री गंगानगर जिले के 800 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया गया। आंकड़ों के संग्रहण हेतु उपकरण के लिए इण्टरनेट अनुप्रयोग मापनी शालू सैनी एवं परमिन्दर कौर, संवेगात्मक परिपक्वता मापनी तारा सबापैथी द्वारा निर्मित एवं व्यक्तित्व परीक्षण हेतु एस.जलौटा और एस.डी.कपूर द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि राजकीय व गैर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत इण्टरनेट का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की छात्र—छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक

अन्तर नहीं पाया गया। जबकि उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत इण्टरनेट का प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता एवं व्यक्तित्व में सार्थक सह—सम्बन्ध पाया गया।

**वर्मा, नरेन्द्र कुमार (2020)** ने **'किशोरों विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक कौशलों पर सामाजिक तन्त्र व्यवस्था स्थलों के प्रभाव का अध्ययन'** विषय पर मोहनलाल सुखड़िया विश्वविद्यालय से शोध कार्य पूर्ण किया। अध्याय में न्यादर्श हेतु भरतपुर जिले के 400 विद्यार्थियों का चयन किा गया तथा आंकड़ों के विश्लेषण हेतु भावनात्मक परिपक्वता मापनी डॉ.यशवीर सिंह तथा डॉ.महेश भार्गव, सामाजिक कौशल मापनी डॉ. विशाल सूद डॉ.आरती आनन्द मंडी व सुरेश कुमार पोद्दार तथा सामाजिक तंत्र व्यवस्था स्वनिर्मित मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि भावनात्मक परिपक्वता पर सामाजिक तन्त्र व्यवस्था स्थलों का प्रभाव धौल जिले के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों एवं छात्राओं पर सर्वाधिक प्रभाव देखने को मिलता है।

## प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

1- माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

1.1 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता का अध्ययन करना।

1.2 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सांवेगिक प्रगति का अध्ययन करना।

1.3 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सामाजिक समायोजन का अध्ययन करना।

1.4 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की व्यक्तित्व एकीकरण का अध्ययन करना।

1.5 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की अनाश्रितता का अध्ययन करना।

## प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनायें

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नलिखित परिकल्पनायें हैं—

1- माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.1 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.2 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सांवेगिक प्रगति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.3 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.4 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की व्यक्तित्व एकीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.5 माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की अनाश्रितता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## प्रस्तुत शोध अध्ययन का परिसीमन

1- प्रस्तुत शोध अध्ययन को माध्यमिक विद्यालयों के छात्र—छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता के विभिन्न आयामों तक परिसीमित किया गया है।

2- प्रस्तुत शोध अध्ययन को माध्यमिक विद्यालयों के 200 छात्र—छात्राओं तक परिसीमित किया गया है।

3- प्रस्तुत शोध अध्ययन को मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र—छात्राओं तक परिसीमित किया गया है।

4- प्रस्तुत शोध अध्ययन संवेगात्मक परिपक्वता के जनसांख्यिकी चर लिंग तक परिसीमित किया गया है।

**प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि**

वर्तमान शोध से संबंधित आंकड़े संग्रह के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

**प्रस्तुत शोध अध्ययन का न्यादर्श**

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत विद्यार्थियों को चयनित किया गया है। न्यादर्श में छात्र एवं छात्राओं की समान संख्या में शामिल है। चार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि के माध्यम से किया गया और स्कूली विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक के माध्यम से किया गया। स्तरीकरण उनके लिंग के आधार पर किया गया है।

**प्रस्तुत शोध अध्ययन के चर**

वर्तमान शोध अध्ययन में, चर इस प्रकार हैं—

- आश्रित चर— संवेगात्मक परिपक्वता
- स्वतन्त्र चर— लिंग (छात्र—छात्रायें)

**प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण**

शोधार्थी द्वारा डॉ. यशवीर सिंह एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत उपकरण संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का उपयोग डेटा संग्रह के उद्देश्य के लिए किया गया है।

**उपयोग की गई सांख्यिकीय तकनीकें**

प्रस्तुत अध्ययन में, माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की लिंग के सम्बन्ध में संवेगात्मक परिपक्वता का पता लगाने के लिए वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकी यानी मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—टेस्ट जैसे सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है।

**आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या**

एकत्र किए गए आंकड़ों का वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकीय तकनीकों के साथ विश्लेषण और व्याख्या की गई।

**परिकल्पना 1— माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका— 1**

**माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता की तुलना**

| चर | न्यादर्श | कुल संख्या | मध्यमान | एस.डी. | टी—वैल्यू | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सांवेगिक परिपक्वता | छात्र | 100 | 32.60 | 2.84 | 0.945 | असार्थक |
| | छात्रायें | 100 | 32.26 | 2.21 | | |

तालिका संख्या 1 के अर्न्तगत माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 32.60 जो छात्रों का है तथा निम्न मध्यमान 32.26 जोकि छात्राओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 198 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 0.945 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में कम है। अत: इस परीक्षण परिणाम में माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता की तुलना करने पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना ($H^1_0$) 'माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' स्वीकृत की जाती है।

**परिकल्पना 1.1— माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका— 2**

**माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता की तुलना**

| चर | न्यादर्श | कुल संख्या | मध्यमान | एस.डी. | टी—वैल्यू | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सांवेगिक स्थिरता | छात्र | 100 | 33.64 | 2.16 | 3.58 | सार्थक |
| | छात्रायें | 100 | 32.35 | 2.89 | | |

तालिका संख्या 2 के अर्न्तगत माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 33.64 जो छात्रों का है तथा निम्न मध्यमान 32.35 जोकि छात्राओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 198 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 3.58 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। अत: इस परीक्षण परिणाम में माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता की तुलना करने पर सार्थक अन्तर पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना ($H^{1.1}_0$) 'माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक स्थिरता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है।

**परिकल्पना 1.2— माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सांवेगिक प्रगति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका— 3**

| चर | न्यादर्श | कुल संख्या | मध्यमान | एस.डी. | टी—वैल्यू | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सांवेगिक प्रगति | छात्र | 100 | 32.38 | 2.86 | 2.88 | सार्थक |
| | छात्रायें | 100 | 32.33 | 2.14 | | |

तालिका संख्या 1.2 के अर्न्तगत माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक प्रगति की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 32.38 जो छात्रों का है तथा निम्न मध्यमान 32.33 जोकि छात्राओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 198 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 2.88 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। अत: इस परीक्षण परिणाम में माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की सांवेगिक प्रगति की तुलना करने पर सार्थक अन्तर पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना ($H^{1.2}{}_0$) 'माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक प्रगति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' अस्वीकृत की जाती है।

**परिकल्पना 1.3— माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका— 4**

**माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की सामाजिक समायोजन की तुलना**

| चर | न्यादर्श | कुल संख्या | मध्यमान | एस.डी. | टी—वैल्यू | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सामाजिक समायोजन | छात्र | 100 | 32.31 | 2.53 | 0.45 | असार्थक |
| | छात्रायें | 100 | 32.17 | 1.77 | | |

तालिका संख्या 1.4 के अर्न्तगत माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 32.31 जो छात्रों का है तथा निम्न मध्यमान 32.17 जोकि छात्राओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 198 पर 'टी' परीक्षण का मूल्य 0.45 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में कम है। अत: इस परीक्षण परिणाम में माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन की तुलना करने पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना ($H^{1.3}{}_0$) 'माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं की के सामाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' स्वीकृत की जाती है।

**परिकल्पना 1.4— माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की व्यक्तित्व एकीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका— 5**

| चर | न्यादर्श | कुल संख्या | मध्यमान | एस.डी. | टी—वैल्यू | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| व्यक्तित्व एकीकरण | छात्र | 100 | 32.36 | 3.07 | 0.129 | असार्थक |
| | छात्रायें | 100 | 32.31 | 2.38 | | |

तालिका संख्या 5 के अर्न्तगत माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व एकीकरण की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 32.36 जो छात्रों का है तथा निम्न मध्यमान 32.31 जोकि छात्राओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 198 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 0.129 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में कम है। अत: इस परीक्षण परिणाम में माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व एकीकरण की तुलना करने पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना $(H^5_0)$ 'माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व एकीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' स्वीकृत की जाती है।

**परिकल्पना 1.6— माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की अनाश्रितता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**तालिका— 6**

**माध्यमिक विद्यालय के छात्र—छात्राओं की अनाश्रितता की तुलना**

| चर | न्यादर्श | कुल संख्या | मध्यमान | एस.डी. | टी—वैल्यू | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अनाश्रितता | छात्र | 100 | 32.33 | 2.87 | 0.466 | असार्थक |
| | छात्रायें | 100 | 32.17 | 1.89 | | |

तालिका संख्या 1.6 के अर्न्तगत माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के अनाश्रितता की तुलना की गयी है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 32.33 जो छात्रों का है तथा निम्न मध्यमान 32.17 जोकि छात्राओं का है। प्रस्तुत तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 198 पर **'टी'** परीक्षण का मूल्य 0.466 है जबकि 0.05 सार्थकता के स्तर पर तालिका का मान 1.96 है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त 'टी' का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में कम है। अत: इस परीक्षण परिणाम में माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के अनाश्रितता की तुलना करने पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अत: प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शून्य परिकल्पना $(H^5_0)$ 'माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के अनाश्रितता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' स्वीकृत की जाती है।

**शैक्षिक निहितार्थ**

- **शिक्षकों हेतु निहितार्थः—** प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत यह ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर के छात्र—छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता का सकारात्मक प्रभाव पडता है। यहां शिक्षकों को अपनी शिक्षण विधियों, कक्षा—कक्ष अन्त:क्रियाओं, निर्देशन तथा परामर्श आदि जैसी क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की आत्म—जागरुकता, आत्मप्रबन्धन, अन्तरवैयक्तिक जागरुकता, अन्तरवैयक्तिक प्रबन्ध, स्वानुभूति इत्यादि जैसी क्षमताओं तथा संवेगों को सकारात्मक रुप से प्रभावित करने पर बल देना चाहिए जिससे विद्यार्थियों सांवेगिक परिपक्वता का विकास किया जा सके। इसी प्रकार संवेगात्मक परिपक्वता के विकास के लिये विद्यार्थियों को अन्तर विषयी अध्ययन के लिए अभिप्रेरित करना चाहिए तथा उन्हें संवेदनाओं और संवेगों की अभिव्यक्ति तथा अनुशासन सीखने पर बल देना चाहिए।
- **विद्यार्थियों हेतु निहितार्थः—** अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों को यह सुझाव दिया जाता है कि यदि उन्हें जीवन में सफलता प्राप्त करनी है सतत् विकास में प्रयत्नशील रहना चाहिए।
- **नीति निर्धारकों हेतु निहितार्थ :—** नीति निर्धारक पाठ्यक्रम निर्माण तथा विकास से सम्बन्धित दिशा निर्देश प्रदान करते हैं और उन्ही दिशा निर्देशों में प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों को समावेशित करने हेतु प्रमुख सुझाव इस प्रकार है—
  - विभिन्न पाठ्य तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं के द्वारा शिक्षा के हर स्तर पर संवेगात्मक तथा इसके कारकों का विकास करने का प्रयास करना चाहिए।
  - उचित पाठ्य सामग्री को उपयुक्त विषयों में समाहित करते हुए बालकों के संज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष के साथ—साथ भावनात्मक पक्ष का विकास करना भी सुनिश्चित करना चाहिए।
  - विद्यालयी तथा महाविद्यालयी स्तर पर सभी विद्यार्थियों को उचित निर्देशन तथा परामर्श की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए।
  - शिक्षण विधियों के निर्धारण के दौरान संवेगों के प्रति जागरुकता तथा नियन्त्रण करने के सम्बन्ध में शिक्षकों को दिशा निर्देश प्रदान किये जाने चाहिए। अंतत: यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध शिक्षा जगत से सीधे जुड़े हुए लोगों के लिए लाभकारी है।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध न सिर्फ शिक्षकों एवं शिक्षा जगत के अभ्यासकर्ताओं को नई दृष्टि प्रदान करता है वरन यह अभिभावकों को भी नए तरीके से सोचने के लिए मजबूर करता है। अभिभावकों को अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के पुनर्निर्माण एवं पूर्ण संयोजन के लिए प्रेरित करता है।

**सन्दर्भग्रन्थ सूची**


- जोशी, सुनील (2020) 'विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता, सांवेगिक परिपक्वता एवं वैज्ञानिक प्रकृति का उपलब्धि से सह—सम्बन्ध' विषय पर शिक्षा विभाग, पैसेफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।
- कौर, मंजीत (2013) 'वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का एक तुलनात्मक अध्ययन, अंतर्राष्ट्रीय अनुक्रमित संदर्भित अनुसंधान जर्नल, आई.एस.एस.एन. 2250—2629, पृष्ठ 48—49

- पात्रा, क्षिप्ती मायी (2024) 'ए स्टडी ऑन इमोशनल मैच्योरिटी एमंग अडोलेसेन्स' विषय पर सुशीलाबाटी गर्वनमेंट उच्च माध्यमिक विद्यालय, राउरकेला, उड़ीसा
- तिवारी, विनीत कुमार (2012) 'इंटरनेट सर्फिंग के संदर्भ में 8वीं से 12वीं कक्षा के छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता का एक तुलनात्मक अध्ययन', अंतर्राष्ट्रीय अनुक्रमित संदर्भित अनुसंधान जर्नल, आईएसएसएन 0975–3486, आर.एन.आई.–राजबल, खंड–IV, अंक 37, पृष्ठ 8–9
- मल्लिक रिंकू सिंह व अर्चना, चतुर्वेदी (2014) 'उच्च माध्यमिक छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और उपलब्धि पर एक अध्ययन', प्रौद्योगिकी और प्रबंधन विज्ञान में अनुसंधान विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल–कलिश, आई.एस.बी.एन.–978–1–63102–445–0, खंड–21, अंक 18
- मंगल, एस. के. (2013) 'एसेंशियल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजिकल', (7वां संस्करण),पी.एच. आई., दिल्ली।
- राठौर, पर्वत सिंह (2021) 'माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक परिपक्वता का एक अध्ययन' विषय पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा।
- सिंह, राशी (2012) 'भावनात्मक परिपक्वता के संबंध में ग्रामीण और शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का एक तुलनात्मक अध्ययन', अंतर्राष्ट्रीय अनुक्रमित संदर्भित अनुसंधान जर्नल VoL-III, अंक–32 पृष्ठ 34–35
- उग्रसैन (2020) 'ए स्टडी ऑफ द इमोशनल मैच्योरिटी एण्ड पर्सनैलिटी ऑफ स्टूडेन्ट्स यूजिंग इण्टरनेट इन सीनियर सेकेण्डरी स्कूलस' विषय पर शिक्षा विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, राजस्थान।
- वर्मा, नरेन्द्र कुमार (2020) 'किशोरों विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता एवं सामाजिक कौशलों पर सामाजिक तन्त्र व्यवस्था स्थलों के प्रभाव का अध्ययन' विषय पर मोहनलाल सुखड़िया विश्वविद्यालय, राजस्थान।